अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब

"नेकी की दा'वत" से लिये गए मवाद की पहली क़िस्त

Gunahon Ki Dawa (Hindi)

गुनाहों की दवा

कुल सफ़ह़ात 24

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

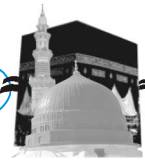

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

गुनाहों की दवा

येह रिसाला (**गुनाहों की दवा**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिदके सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

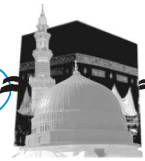

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

यह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़्हा 27 ता 49 से लिया गया है।

गुनाहों की दवा

दुआए अत्तार

या अल्लाह ! जो कोई रिसाला "**गुनाहों की दवा**" के 24 सफ़्हात पढ़ या सुन ले, उस को गुनाहों की बीमारी से शिफ़ाए कामिला अ़ता फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

मग़्फ़िरतों भरा इज्तिमाअ़ : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **सरकारे मदीनए मुनव्वरह,** सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ सय्याह़ (या'नी सैर करने वाले) फ़िरिश्ते हैं, जब वोह मह़ाफ़िले **ज़िक्र** के पास से गुज़रते हैं तो एक दूसरे से कहते हैं : (यहां) बैठो। जब ज़ाकिरीन (या'नी ज़िक्र करने वाले) दुआ़ मांगते हैं तो फ़िरिश्ते उन की दुआ़ पर **आमीन** (या'नी "ऐसा ही हो") कहते हैं। जब वोह नबी पर **दुरूद** भेजते हैं तो वोह फ़िरिश्ते भी उन के साथ मिल कर **दुरूद** भेजते हैं ह़त्ता कि वोह **मुन्तशिर** (या'नी इधर उधर) हो जाते हैं, फिर फ़िरिश्ते एक दूसरे को कहते हैं कि इन खुश नसीबों के लिये खुश ख़बरी है कि वोह **मग़्फ़िरत** के साथ वापस जा रहे हैं। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۳ص۱۲۵حدیث۷۷۵۰)

मस्जिद आबाद करने के तीन फ़ज़ाइल : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! ज़िक्र व दुरूद की मह़फ़िलों की भी क्या बात है ! याद रहे ! सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, दर्स के म-दनी ह़ल्के़ और इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त वग़ैरा भी **ज़िक्र** ही की मह़फ़िलें हैं। किस क़दर खु़श नसीब हैं वोह मुसल्मान जो **अच्छी अच्छी निय्यतों** के साथ इस त़रह़ के रह़मतों भरे इज्तिमाआ़त में दिल लगा कर शिर्कत फ़रमाते हैं और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मग़्फ़िरत याफ़्ता उठते हैं। अलबत्ता ऐसे मग़्फ़िरत भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की सआ़दत हर एक को नहीं मिला करती येह फ़क़त़ खु़श क़िस्मत ह़ज़रात ही का ह़िस्सा है। उ़मूमन दर्स व

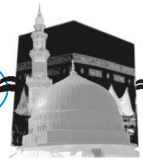

बयान **मसाजिद** में हुवा करते हैं और मसाजिद के अन्दर होने वाले म-दनी ह़ल्क़ों में बैठना चूंकि बहुत ज़ियादा सवाब का बाइ़स होता है लिहाज़ा शैत़ान मस्जिद में दिल लगने ही नहीं देता । **"मस्जिद भरो तह़रीक"** जारी फ़रमाइये और मस्जिदें ख़ूब ख़ूब आबाद कीजिये और शैत़ान को नाकाम व ना मुराद कीजिये । **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मा'क़िल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम से बयान किया जाता था कि اَلْمَسْجِدُ حِصْنٌ حَصِينٌ مِّنَ الشَّيْطٰن या'नी मस्जिद शैत़ान से बचने के लिये एक मज़्बूत़ क़ल्आ़ है । (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج۸ ص۱۷۲) मज़ीद तह़रीस (या'नी ह़िर्स दिलाने) के लिये मस्जिद के फ़ज़ाइल पर मब्नी **तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पेश किये जाते हैं : ﴿1﴾ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** वाले हैं । (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۵۸حدیث ۲۵۰۲) ﴿2﴾ जो मस्जिद से **मह़ब्बत** करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपना मह़बूब बना लेता है (ایضاً ج٤ص٤٠٠حدیث ٦٣٨٣) ﴿3﴾ जब कोई बन्दा ज़िक्र या नमाज़ के लिये **मस्जिद** को ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है जैसा कि जब कोई ग़ाइब आता है तो उस के घर वाले उस से ख़ुश होते हैं । (اِبن ماجه ج۱ ص٤٣٨ حدیث ٨٠٠)

वोह सलामत रहा क़ियामत में पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर मेरी जानिब से लाख बार सलाम
मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर
भेज ऐ मेरे किर्दिगार सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी का मोह़ताज नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ पर क़ादिर है, वोह हरगिज़ हरगिज़ किसी का मोह़ताज नहीं, उस ने अपनी क़ुदरते कामिला से इस दुन्या को बनाया, इसे त़रह़ त़रह़ से सजाया और फिर इस में इन्सानों को बसाया । **अल्लाह** तआ़ला ने लोगों की हिदायत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन **रुसुल व अम्बिया** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मब्ऊ़स

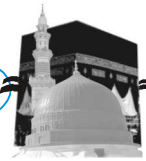

फ़रमाया (या'नी भेजा)। वोह अगर चाहे तो **अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बिग़ैर भी बिगड़े हुए इन्सानों की इस्लाह़ कर सकता है, लेकिन उस की मशिय्यत (या'नी मरज़ी) कुछ इस त़रह़ है कि मेरे बन्दे **नेकी की दा'वत** दें, मेरी राह में **मशक़्क़तें** झेलें और मेरी बारगाहे आ़ली से द-रजाते रफ़ीआ़ (या'नी बुलन्द द-रजे) ह़ासिल करें। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूलों और नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **नेकी की दा'वत** के लिये दुन्या में भेजता रहा और आख़िर में अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मब्ऊ़स किया और **आप** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिल्सिलए **नुबुव्वत ख़त्म** फ़रमाया। फिर येह **अ़ज़ीमुश्शान** मन्सब अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत के सिपुर्द किया कि ख़ुद ही आपस में एक दूसरे की इस्लाह़ करते रहें और **नेकी की दा'वत** के इस अहम फ़रीज़े को सर अन्जाम दें। यूं रहती दुन्या तक **हर मुसल्मान अपनी अपनी जगह मुबल्लिग़ है** ख़्वाह वोह किसी भी शो'बे से **तअ़ल्लुक़** रखता हो, या'नी वोह आ़लिम हो या इमामे मस्जिद, पीर हो या मुरीद, ताजिर हो या मुलाज़िम, अफ़्सर हो या मज़्दूर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, **अल ग़रज़** जहां जहां वोह रहता हो, काम काज करता हो, अपनी सलाह़िय्यत के मुत़ाबिक़ अपने गिर्दो पेश के माह़ोल को **सुन्नतों** के सांचे में ढालने के लिये कोशां रहे और **नेकी की दा'वत** का म-दनी काम जारी रखे।

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चरचा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम बहरे ख़ाके मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआन में नेकी की दा'वत का हुक्म : **ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ ने अपने पाक क़ुरआन में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर **नेकी की दा'वत** की जानिब रग़बत दिलाई है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 128 पर

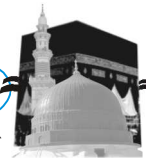

पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 104 में इर्शाद होता है :

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गुरोह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे ।

हर एक अपने अपने मन्सब के मुत़ाबिक़ नेकी की दा'वत दे : **मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत,** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नईमी" में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : **ऐ मुसल्मानो !** तुम सब को ऐसा गुरौह होना चाहिये या ऐसी तन्ज़ीम बनो या ऐसी तन्ज़ीम बन कर रहो जो तमाम टेढ़े (या'नी बिगड़े हुए) लोगों को ख़ैर (या'नी नेकी) की दा'वत दे, काफ़िरों को ईमान की, फ़ासिक़ों को तक़्वे की, ग़ाफ़िलों को बेदारी की, जाहिलों को इल्म व मा'रिफ़त की, ख़ुश्क मिज़ाजों को **लज़्ज़ते इश्क़** की, सोने वालों को बेदारी की और अच्छी बातों, अच्छे अ़क़ीदों, अच्छे अ़-मलों का ज़बानी, क़-लमी, अ़-मली, क़ुव्वत से, नरमी से (और ह़ाकिम अपने मह़्कूम व मा तह़्त को) गरमी से हुक्म दे और बुरी बातों, बुरे अ़क़ीदे, बुरे कामों, बुरे ख़यालात से लोगों को (अपने अपने मन्सब के मुत़ाबिक़) ज़बान, दिल, अ़मल, क़लम, तलवार से रोके । **मज़ीद** फ़रमाते हैं :

हर मुसल्मान मुबल्लिग़ है : **सारे** मुसल्मान मुबल्लिग़ हैं, सब पर ही फ़र्ज़ है कि लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें । (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 72, बि तग़य्युर) कुछ आगे चल कर ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी तफ़्सीरे नईमी में **बुख़ारी शरीफ़** की येह ह़दीसे पाक नक़्ल की है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत, मख़्ज़ने** जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : بَلِّغُوْا عَنِّی وَلَوْ اٰيَةً या'नी मेरी त़रफ़ से पहुंचा दो अगर्चे एक ही आयत हो । (صَحیح بُخاری ج ۲ ص۴۶۲ حدیث۳۴۶۱)

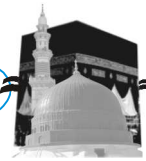

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचा दूं
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जिस का फ़ाएदा दूसरों को पहुंचे : **मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मजीद फ़रमाते हैं : "इस्लाम में तब्लीग़ बड़ी **अहम इबादत** है कि तमाम इबादतों का फ़ाएदा ख़ुद अपने को (या'नी अपनी ज़ात को) होता है मगर तब्लीग़ का फ़ाएदा दूसरों को भी। "**लाज़िम**" (या'नी सिर्फ़ अपनी ज़ात को फ़ाएदा पहुंचाने वाले अ़मल) से "**मु-तअ़द्दी**" (ऐसा अ़मल जो दूसरों को भी फ़ाएदा दे वोह) अफ़्ज़ल है। (रिवायत में है कि) किसी ने **हुज़ूरे अन्वर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा कि बेहतरीन बन्दा कौन है ? फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला से डरने वाला, सिलए रेहमी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) करने वाला, **अच्छी बातें बताने वाला** और बुराइयों से रोकने वाला। **(اَلزُّهدُ الكبير لِلْبَيْهَقِى ص ٣٢٧ حديث ٨٧٧)** हज़रते सय्यिदुना हसन (बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى) फ़रमाते हैं कि "जो अच्छी बातों का हुक्म दे, बुराइयों से रोके वोह **अल्लाह** तआ़ला का भी ख़लीफ़ा है, उस के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का भी और उस की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) का भी।" (ह़दीसे पाक में है) अगर मुसल्मानों ने तब्लीग़ छोड़ दी तो उन पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत् होंगे, और उन की दुआएं क़बूल न होंगी। **(رُوحُ الْمَعانى ج ٤ ص ٣٢٦)** **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो ! भलाई का हुक्म दो, बुराई से मन्अ़ करो तुम्हारी ज़िन्दगी बख़ैर गुज़रेगी। **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि तब्लीग़ बेहतरीन जिहाद है **(تفسيرِ كبير ج ٣ ص ٣١٦)** जैसे तब्लीग़ करना बेहतरीन इबादत है ऐसे ही तब्लीग़ छोड़ देना बद तरीन जुर्म और छोड़ने वाला ज़लीलो ख़्वार।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 72, बि तग़य्युर) **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जो दिल अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई न समझे तो उस (दिल) के ऊपर वाले हिस्से को ऐसे नीचे कर दिया जाएगा जैसे थेले को उलटा किया जाता है और फिर थेले के अन्दर की चीज़ें बिखर जाती हैं। **(مُصَنَّف ابن اَبى شَيْبه ج ٨ ص ٦٦٧ رقم ١٢٠،١٢٤)**

www.dawateislami.net

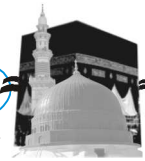

गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर नदामत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल चारों त़रफ़ गुनाह ही गुनाह किये जा रहे हैं ह़त्ता कि ब ज़ाहिर किसी नेक नज़र आने वाले शख़्स के क़रीब जाएं तो वोह भी बसा अवक़ात अ़क़ीदे की ख़राबियों, ज़बान की बे एह़तियातियों, बद निगाहियों और बद अख़्लाक़ियों की आफ़तों में मुब्तला नज़र आता है, आह ! हर सम्त गुनाह गुनाह और बस गुनाह ही नज़र आ रहे हैं ! नेक बन्दे बेशक मौजूद हैं मगर इन की ता'दाद काफ़ी कम हो चुकी है । ऐसे ना मुसाइ़द ह़ालात में اَلْحَمْدُ لِلّٰه सुन्नतों भरी तह़रीक, **''दा'वते इस्लामी''** का वुजूदे मस्ऊ़द किसी ने'मते ग़ैर **मु-तरक़्क़बा** से कम नहीं । आइये ! और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त और आ'माल की इस्लाह़ का सामान कीजिये । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) के अ़लाक़ा केमाड़ी में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : अ़र्सए दराज़ से मैं गुनाहों के मरज़ में मुब्तला था, बात बात पर गाली गलोच, लड़ाई झगड़ा और दंगा फ़साद जैसी ना पसन्दीदा ह़-र-कतें मेरी आ़दत में शामिल हो चुकी थीं और फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने का शौक़ तो जुनून की ह़द तक था । मेरी तौबा की सबील (या'नी राह) कुछ इस त़रह़ बनी कि मैं एक बंगले पर बत़ौरे ड्राइवर मुला-ज़मत करता था, एक दिन काम से फ़ारिग़ हो कर T.V रूम में बैठ गया । वहां मुझे ब ज़रीअ़ए **म-दनी चेनल** सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई, बयान ने मुझे सर ता पा हिला कर रख दिया, मुझे अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर नदामत होने लगी, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा की और राहे सुन्नत अपना ली । जब म-दनी चेनल पर र-मज़ानुल मुबारक के 30 दिन के तरबिय्यती ए'तिकाफ़ की रग़बत दिलाई गई तो **लब्बैक** कहते हुए मैं ने 30 दिन के तरबिय्यती ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ली । ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस निय्यत को अ़-मली जामा पहनाते हुए दा'वते इस्लामी के **आ़-लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना (कराची) में ए'तिकाफ़ की ब-र-कतें ह़ासिल कर रहा हूं ।

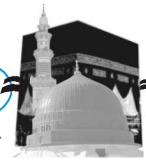

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही मैं हाथों हाथ यक मुश्त 12 माह के म-दनी क़ाफ़िले में भी सफ़र करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों की दवा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! म-दनी चेनल की ब-र-कत से गुनाहों की बीमारी में इफ़ाक़ा हुवा और मुकम्मल माहे र-मज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ की और वोह भी दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में सआ़दत मिल गई और हाथों हाथ 12 माह के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनने की भी निय्यत नसीब हुई बहर ह़ाल सभी को चाहिये कि गुनाहों की बीमारी का इ़लाज करें, अगर गुनाह करते करते बिग़ैर तौबा मर गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा तो यक़ीन जानिये कहीं के न रहेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की अदाएं भी ख़ूब हुवा करती हैं, वोह नेकियां करने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते और **गुनाहों की दवा** तलाश करते फिरते हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा, किसी इ़बादत गुज़ार नौ जवान के साथ बसरे में कहीं से गुज़र रहा था कि एक **त़बीब** पर नज़र पड़ी, जिस के सामने बहुत से मर्द व औ़रत और बच्चे हाथों में पानी से भरी शीशियां लिये अपनी बीमारी के इ़लाज के त़लब गार थे। मेरे साथ जो इ़बादत गुज़ार नौ जवान था उस ने कहा : ऐ त़बीब ! क्या आप के पास कोई **गुनाहों की दवा** भी है ? वोह बोला : है। नौ जवान ने कहा : मुझे इ़नायत फ़रमा दीजिये। उस ने जवाब दिया : **गुनाहों की दवा** का नुस्ख़ा दस चीज़ों पर मुश्तमिल है : ﴿1﴾ **फ़क़्र** और **इन्किसारी** के दरख़्त की जड़ें लो। फिर ﴿2﴾ उस में **तौबा** का **हलीला** (या'नी हड़ नामी देसी दवा) मिला लो। फिर ﴿3﴾ उसे **रिज़ाए** इलाही की खरल (या'नी दवा कूटने की पथ्थर की कूंडी) में डालो और ﴿4﴾ **क़नाअत** के हावन दस्ते से ख़ूब अच्छी त़रह़ पीस लो। फिर ﴿5﴾ उसे **तक़्वा** व परहेज़ गारी की देग में डाल दो और ﴿6﴾ साथ ही उस में **ह़या** का पानी भी मिला लो। फिर ﴿7﴾ उसे **महब्बते इलाही** की आग से जोश दो ﴿8﴾ इस के बा'द उसे **शुक्र** के पियाले में डाल लो। और ﴿9﴾ **उम्मीद** व रजा

www.dawateislami.net

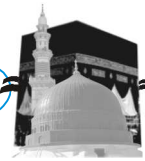

के पंखे से हवा दो और फिर ﴿10﴾ **ह़म्दो** सना के चमचे से पी जाओ । अगर तुम ने येह सब कुछ कर लिया तो याद रखो कि येह **नुस्ख़ा** तुम्हें, दुन्या व आख़िरत की हर बीमारी व मुसीबत में नफ़्अ़ पहुंचाएगा । (المُنَبِّهات ص١١١)

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब ! नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब !
कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा कब मैं बीमार, मदीने का बनूंगा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खाओ पियो और जान बनाओ ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज ग़ैर मुस्लिमों की मज़्मूम तह़रीकें दुन्या में हर जगह अपने मज़्हब की सालिमिय्यत व बक़ा बल्कि इरतिक़ा (या'नी तरक़्क़ी) के लिये सर गर्मे अ़मल हैं मगर अफ़्सोस ! दुन्या की **मह़ब्बत** में मस्त मुसल्मान को दुन्या के धन्दों ही से फ़ुरसत नहीं, अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! इस दौर के मुसल्मानों की अक्सरिय्यत ने फ़क़त़ **''खाओ पियो और जान बनाओ''** को ही गोया मक़्सदे ह़यात समझ रखा है, दूसरों को सलातो सुन्नत की तल्क़ीन की किस को पड़ी है ! बल्कि इन के पास तो आख़िरत की भलाई पाने के लिये इतना वक़्त भी नहीं जो इत्मीनान से नमाज़ ही पढ़ सकें और वोह दर्द भरा दिल भी कहां से लाएं जो सुन्नत की **मह़ब्बत** से लबरेज़ हो । बस हर वक़्त दुन्या, दुन्या ही की बेहतरियों का तसव्वुर है ! **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 125 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''शुक्र के फ़ज़ाइल'' सफ़ह़ा नम्बर 103 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो फ़क़त़ खाने, पीने और लिबास ही को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत समझे तो यक़ीनन उस का इ़ल्म कम है ।

(اَلزّهد لابن المبارك ص ١٣٤ رقم ٣٩٧)

देता हूं तुझे वासित़ा मैं प्यारे नबी का
उम्मत को ख़ुदाया रहे सुन्नत पे चला दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

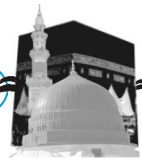

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

दुन्या ना पसन्द होने का पुरकैफ़ सबब : **हमारी** हालत येह है कि दुन्या की **महब्बत** दिल से कम होने का नाम नहीं लेती और हर वक़्त दुन्या की ने'मतें और आसाइशें बढ़ाने ही की धुन है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे और हक़ीक़ी आ़शिक़ाने रसूल ख़्वाहिशाते दुन्या से महफ़ूज़ी और दुन्या की ने'मतों की कमी पर शुक्र गुज़ार होते थे चुनान्चे "शुक्र के फ़ज़ाइल" सफ़हा नम्बर 68 पर दी हुई एक इ़ब्रत नाक रिवायत सुनिये और इ़ब्रत से सर धुनिये : ह़ज़रते सय्यिदुना **मज्मअ़** अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के **मु-तअ़ल्लिक़** बयान करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझे दुन्या (की आसाइशों) से बचा लेने का एह़सान, इस (या'नी दुन्या) की कुशा-दगी (म-सलन माल व दौलत वग़ैरा) की सूरत में मिलने वाली ने'मत से अफ़्ज़ल है । क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दुन्या को पसन्द नहीं फ़रमाया, इस लिये मुझे वोह ने'मतें जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पसन्द फ़रमाईं, उन ने'मतों से ज़ियादा प्यारी हैं, जो उस ने अपने नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये ना पसन्द फ़रमाईं ।" (شُعَبُ الْاِیمان ج٤ ص١١٧ حدیث ٤٤٨٩ مُلَخَّصاً)

दुन्या के माल व दौलत की कसरत और इस की ख़ूब आसाइशें होना बेशक ने'मत है मगर इन चीज़ों से बच कर रहना येह **बड़ी ने'मत** है ।

पीछा मेरा दुन्या की महब्बत से छुड़ा दे
या रब ! मुझे दीवाना मुह़म्मद का बना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लाम का सिर्फ़ नाम रह जाएगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ह़ालात बद से बदतर होते जा रहे हैं, ऐसा लगता है कि अब **इस्लाम** का तो सिर्फ़ नाम ही नाम रह गया है, सद करोड़ अफ़्सोस ! मुसल्मानों का अन्दाज़े ज़िन्दगी ज़ियादा तर ग़ैर मुस्लिमों वाला हो चुका है, निहायत तवज्जोह से येह रिवायत समाअ़त फ़रमाइये और दिल

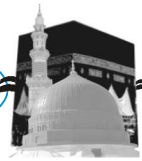

जलाइये बल्कि हो सके तो आंसू बहाइये, चुनान्चे ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : अ़न्क़रीब लोगों पर वोह वक़्त आएगा, जब **इस्लाम का सिर्फ़ नाम** और क़ुरआन का सिर्फ़ (रस्म व) रवाज ही रह जाएगा, उन की मस्जिदें आबाद होंगी मगर हिदायत से ख़ाली, उन के उ़-लमा आस्मान के नीचे बद तरीन ख़ल्क़ होंगे, उन से फ़ितना निकलेगा और उन्हीं में लौट जाएगा । **(شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۳۱۱ حدیث۱۹۰۸)**

सिर्फ़ नाम के मुसल्मान रह जाएंगे : **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "(इस्लाम का सिर्फ़ नाम ही रह जाएगा या'नी वोह) इस त़रह़ कि मुसल्मानों के नाम इस्लामी होंगे और अपने (आप) को मुसल्मान (भी) कहते होंगे मगर रंग ढंग सब काफ़िरों के से (होंगे) जैसा (कि) आज (कल) देखा जा रहा है **या** अरकाने इस्लाम के नाम व शक्ल तो बाक़ी रहेंगे मगर मक़्सूद फ़ौत हो जाएगा, (म-सलन) **नमाज़** का ढांचा होगा ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ नहीं (होगा), **ज़कात** देंगे मगर क़ौम परवरी ख़त्म हो जाएगी, **ह़ज** करेंगे मगर सिर्फ़ सैर (व तफ़रीह़) के लिये, **जिहाद** होगा मगर सिर्फ़ मुल्क गीरी (ह़ुकूमत व सल्त़नत के ह़ुसूल) के लिये ।" मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (क़ुरआन का सिर्फ़ रस्म व रवाज ही रह जाएगा) की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : **रस्म** नक़्श को भी कहते हैं और त़रीक़े को भी, यहां दोनों मा'ना दुरुस्त हैं या'नी **क़ुरआन** के नुक़ूश काग़ज़ में और अल्फ़ाज़ ज़बान पर होंगे मगर एह़तिराम क़ल्ब (या'नी दिल) में और अ़मल क़ालिब (या'नी बदन) में न होगा **या** रस्मन क़ुरआन पढ़ा **या** रख्खा जाएगा, कचहरियों (या'नी कोर्टों) में झूटी क़समें खाने के लिये और घरों में मय्यित पर पढ़ने के लिये (तो इस का इस्ति'माल होगा मगर) अ़मल (करने) के लिये ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) के क़वानीन होंगे । (इस ह़िस्सए ह़दीस, "उन की मस्जिदें आबाद होंगी मगर हिदायत से ख़ाली" से मुराद येह है कि) **मस्जिदों** की इ़मारत आ़लीशान, दरो दीवार **नक़्शीं,**

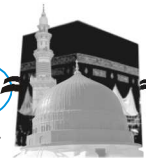

(या'नी नक़्शो निगार से आरास्ता) बिजली की फ़िटिंग (भी) ख़ूब मगर नमाज़ी कोई नहीं, उन के इमाम बे दीन, गोया मस्जिदें बजाए हिदायत के बे दीनियों का सर चश्मा बन जाएंगी, हर मस्जिद से लाउड स्पीकर के ज़रीए दर्स की आवाज़ें (तो) आएंगी मगर (उन बे दीन उ़-लमा के) वोह दर्स ज़हरे क़ातिल होंगे, जिन में क़ुरआन के नाम पर कुफ़्र व तुग़्यान (तुग़्यान या'नी बग़ावत, सरकशी) फैलाया जाएगा । (ह़दीसे पाक के आख़िरी ह़िस्से की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं :) या'नी बे दीन उ़-लमाए सूअ (या'नी बद मज़हब और बद अ़मल आ़लिमों) की कसरत होगी, जिन का फ़ितना सारे मुसल्मानों को (ऐसे) घेर लेगा जैसे दाएरे का ख़त़ (कि) जहां से शुरूअ़ होता है वहीं पहुंच कर दाएरे को मुकम्मल बना देता है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 229)

कफ़न चोर ने जब ग़ैबी आवाज़ सुनी..... : याद रहे ! मसाजिद में होने वाले उ़-लमाए ह़क़ के दर्से क़ुरआनो ह़दीस और ईमान अफ़्रोज़ बयान की यहां हरगिज़ मज़म्मत मुराद नहीं, इन ह़ज़रात के दुरूस व बयानात उम्मत के लिये सर चश्मए हिदायत और बाइ़से नुज़ूले रह़मत व सबबे मग़्फ़िरत होते हैं चुनान्चे मश्हूर बुज़ुर्ग **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم एक बार "बल्ख़" शहर में बयान फ़रमा रहे थे, दौराने बयान गुनहगारों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त दुआ़ मांगी : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस इज्तिमाअ़ में जो सब से बड़ा गुनहगार है, अपनी रह़मत से उस की मग़्फ़िरत फ़रमा ।" एक **कफ़न चोर** भी वहां मौजूद था, जब रात हुई तो वोह कफ़न चुराने की ग़रज़ से क़ब्रिस्तान गया मगर जूं ही **क़ब्र** खोदी एक ग़ैबी आवाज़ गूंज उठी : "**ऐ कफ़न चोर !** तू आज दिन के वक़्त **ह़ातिमे असम** के इज्तिमाअ़ में बख़्शा जा चुका है फिर आज रात येह गुनाह क्यूं करने लगा है !" येह सुन कर वोह रो पड़ा और उस ने सच्चे दिल से तौबा कर ली । **(تذکرۃ الاولیاء ص۲۲۲ مُلَخَّصًا)**

मुझे दे दे ईमान पर इस्तिक़ामत पए सय्यिदे मुह़तशम या इलाही
मेरे सर पे इस्यां का बार आह मौला ! बढ़ा जाता है दम बदम या इलाही

www.dawateislami.net

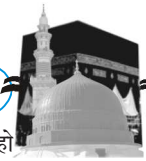

ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है
येह तेरा ही तो है करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या ग़ैर मुस्लिम भी हमारी नक़्ल करते हैं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

देखा आप ने ! वाक़ेई नेक बन्दों की ज़ियारत व सोहबत, इन के बयान की ब-र-कत और आशिक़ाने रसूल के इज्तिमाआ़त में शिर्कत दोनों जहानों के लिये बाइसे सआ़दत है । इस **हिकायत** से येह भी मा'लूम हुवा कि मुबल्लिग़ को बिगड़े हुए मुसल्मानों से हमदर्दी होनी चाहिये, गुनहगारों को समझाने के साथ साथ उन के हक़ में दुआए ख़ैर से भी ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये । येह तो तब्अ़ ताबिईन के ज़र्रीं (या'नी सुनहरे) दौर का वाक़िआ़ था । अफ़्सोस अब तो अ़-मली तौ़र पर दीन से कुछ ज़ियादा ही दूरी हो चुकी है, आज कल के अक्सर मुसल्मानों को न जाने क्या हो गया है कि वोह सुन्नतों को भुला कर अग़्यार (या'नी ग़ैरों) के फ़ेशन अपनाने ही में फ़ख़्र महसूस करते हैं, ग़ैर मुस्लिमों जैसे लिबास में मल्बूस होना ही इन के नज़्दीक शायद ऐन सआ़दत है ! क्या किसी ग़ैर मुस्लिम को भी आप ने देखा है जो मुसल्मान की हक़ीक़ी वज़्अ़ क़त़्अ़ (जैसा कि एक मुठ्ठी दाढ़ी, सुन्नत के मुताबिक़ ज़ुल्फ़ें, इ़मामा शरीफ़ और सुन्नतों भरा लिबास वग़ैरा) अपनाए हुए हो ! हरगिज़ नहीं देखा होगा । येह लोग बड़े अ़य्यार व मक्कार हैं, वोह अपने बातिल व बदबूदार अत्वार छोड़ कर मुसल्मानों की नक़्ल हरगिज़ नहीं करते मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! ग़ैरों की नक़्क़ाली वाली ह़माक़त तो अब मुसल्मानों के दिमाग़ों में घुस गई है ।

ऐ मेरे ग़फ़्लत की नींद सोने वाले इस्लामी भाइयो ! ख़ुदारा होश कीजिये !!

इस से पहले कि मौत का फ़िरिश्ता आप का रिश्तए ह़यात इस दुन्या से हमेशा हमेशा के लिये मुन्क़त़अ़ कर दे (या'नी काट कर रख दे), जाग उठिये ! और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी बेदार कीजिये !! वरना याद रखिये

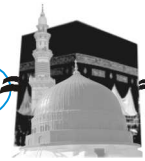

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ मुसल्मानो !

तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाकाम आ़शिक़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों के ह़ालात आज ना गुफ़्ता बिह हैं, गुनाहों का ज़ोरदार सैलाब जिसे देखो बहाए लिये जा रहा है, ऐसे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल किसी ने'मते उ़ज़्मा से कम नहीं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस से मुन्सलिक होने वालों की ज़िन्दगियों में ह़ैरत अंगेज़ तब्दीलियां बल्कि म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है । इस ज़िम्न में एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े मलीर के एक इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी में आने वाले म-दनी इन्क़िलाब के बारे में कुछ यूं तह़रीर फ़रमाते हैं : मैं शूमिये क़िस्मत से **इ़श्क़े मजाज़ी** में गरिफ़्तार हो कर गुनाहों में बद मस्त हो गया था, एक रोज़ मुझे ख़बर मिली कि घर वालों ने "उस" की शादी कहीं और कर दी है । इस वुक़ूए़ (या'नी सदमे) के बा'द मेरी ज़िन्दगी अजीरन (या'नी दुश्वार) हो कर रह गई, बिल आख़िर **मेरा भी अन्जाम वोही हुवा जो इ़श्क़े मजाज़ी में शैत़ान के हाथों खिलोना बनने वाले सेंकड़ों नाकाम व ना मुराद आ़शिक़ों का हुवा करता है** चुनान्चे बेज़ार हो कर **मैं चरस, अफ़्यून, शराब, हेरोईन और नशा आवर इन्जेक्शन जैसी मोहलिक मुनश्शिय्यात का आ़दी बन गया ।** अपने फ़ासिद गुमान में क़ल्बी सुकून पाने की ख़ातिर शायद ही कोई नशा हो जो मैं ने न किया हो । ज़िन्दगी से इस क़दर तंग आ चुका था कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कई बार तो ख़ुदकुशी की भी नाकाम कोशिश की, ख़ुद को ख़त्म करने की ख़ातिर डेटोल, पेट्रोल और तेज़ाब तक पिया** लेकिन सांसों की गिनती अभी पूरी न हुई थी । **रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी पर क़ुरबान जाऊं कि इतनी ना फ़रमानियों के बा वुजूद उस ने मुझ पर बाबे रह़मत बन्द न किया, सबबे करम कुछ यूं हुवा कि मेरी मुलाक़ात

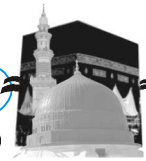

दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता एक **आ़शिक़े रसूल** से हो गई। उन के मीठे बोल सुन कर मेरे दिल में अज़ सरे नौ जीने की उमंग जाग उठी, उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से 29 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1427 सि. हि. ब मुत़ाबिक़ 2006 सि. ई. को मुझे दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना की रूह़ानिय्यत से भरपूर फ़ज़ाओं में आने की सआ़दत ह़ासिल हुई। यहां हर सू सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे वाले आ़शिक़ाने रसूल को देख कर मेरा ईमान ताज़ा हो गया और हाथों हाथ 1427 सि. हि. के माहे **र-मज़ानुल मुबारक** के 30 रोज़ा इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठ गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ गुनाहगार को भी **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े रखने की सआ़दत ह़ासिल हुई, **म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से मेरे सर से इ़श्क़े मजाज़ी का भूत उतर गया, दिल से बुरे ख़यालात जाते रहे, मैं ने चेहरे पर दाढ़ी, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ और बदन पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ म-दनी लिबास सजा लिया** और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पंज वक़्ता नमाज़ का पाबन्द बन गया और ता दमे तह़रीर **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त म-दनी कामों के लिये कोशां हूं।

अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल
ब फ़ैज़ाने अह़मद रज़ा اِنْ شَآءَاللّٰه येह फूले फलेगा सदा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैर शर-ई इ़श्क़े मजाज़ी की तबाह कारियां : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इ़श्क़े मजाज़ी की आग में सुलगने वाला आ़शिक़े नाशाद एक आ़शिक़े रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में आ कर **इ़श्क़े रसूल** का जाम पीने में काम्याब हो गया। बस इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम हो गया वरना **इ़श्क़े मजाज़ी** का ऐसा अ़जीबो ग़रीब मुआ़-मला है कि उ़मूमन जो एक बार इस की लपेट में आ गया, उस का बच निकलना

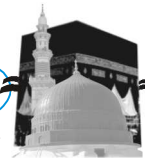

दुश्वार होता है । आज कल इश्क़े मजाज़ी की ख़ूब हवा चल रही है, इस की सब से बड़ी वजह अक्सर मुसल्मानों में इस्लामी मा'लूमात की कमी और दीनी माहोल से दूरी है । इसी सबब से हर त़रफ़ गुनाहों का सैलाब उमंड आया है ! T.V, V.C.R और इन्टरनेट वग़ैरा में इश्क़िया फ़िल्मों और फ़िस्क़िया डिरामों को देख कर या इश्क़ बाज़ियों की मुबा-लग़ा आमेज़ अख़्बारी ख़बरों नीज़ नाविलों, बाज़ारी माहनामों डाइजस्टों में फ़र्ज़ी इश्क़िया अफ़्सानों को पढ़ कर या कॉलेजों और यूनीवर्सिटियों की मख़्लूत़ (जहां लड़का लड़की साथ हों ऐसी) क्लासों में बैठ कर या ना महरम रिश्तेदारों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ हो कर आपस में बे तकल्लुफ़ी की दलदल के अन्दर उतर कर अक्सर नौ जवानों को किसी न किसी से **इश्क़** हो जाता है । पहले यक त़रफ़ा होता है फिर जब फ़रीक़े अव्वल फ़रीक़े सानी को मुत्त़लअ़ करता है तो बा'ज़ अवक़ात दो त़रफ़ा हो जाता है और फिर उ़मूमन गुनाह व इ़स्यान का त़ूफ़ान खड़ा हो जाता है । फ़ोन पर जी भर कर बे शरमाना बात बल्कि बे हिजाबाना मुलाक़ात के सिल्सिले होते हैं, मक्तूबात व सौग़ात के तबा-दले होते हैं, शादी के ख़ुफ़्या क़ौल व क़रार हो जाते हैं, अगर घर वाले दीवार बनें तो बसा अवक़ात दोनों फ़िरार हो जाते हैं, बा'दहू (या'नी उस के बा'द) अख़्बार में उन के इश्तिहार छपते हैं, ख़ानदान की आबरू का सरे बाज़ार नीलाम होता है, कभी "कोर्ट मेरेज" की तरकीब बनती है तो مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी यूं ही बिग़ैर निकाह़ के..... और ऐसे बे रह़मों के ना जाइज़ बच्चों की लाशें कचरा कूंडियों में मिलती हैं नीज़ ऐसा भी होता रहता है कि भागते नहीं बनती तो **ख़ुदकुशी** की राह ली जाती है जिस की ख़बरें आए दिन अख़्बारात में छपती रहती हैं ।

यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का दामन इश्क़े मजाज़ी से पाक है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल इस्लामी मा'लूमात की कमी का दौर दौरा है, जहालत डेरा डाल कर पड़ी है, बा'ज़ आ़शिक़ाने नाशाद, अपनी गन्दी इश्क़ बाज़ियों पर पर्दा डालने के लिये यहां तक कहते सुनाई देते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी **ज़ुलैख़ा** से इश्क़ किया था ! (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) ऐसा हरगिज़ नहीं, यक़ीनन इस त़रह़ बकने वाले आ़शिक़ाने नादान सख़्त ख़त़ा पर हैं । अपने नफ़्स की शरारतों के मुआ़-मले में शैत़ान की बातों में आ कर बे सोचे समझे किसी भी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

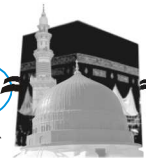

के बारे में ज़बान खोलना ईमान के लिये इन्तिहाई ख़त़रनाक होता है । **याद रखिये ! नबी** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **की अदना गुस्ताख़ी भी कुफ़्र है ।** ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी हैं और हर नबी मा'सूम । नबी से हरगिज़ कोई मज़्मूम ह़-र-कत सादिर नहीं हो सकती । चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** सफ़ह़ा 445 पर पारह 12 **सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 24 में **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक औ़रत ने इस का इरादा किया और वोह भी औ़रत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के **नुफ़ूसे** त़ाहिरा को अख़्लाक़े ज़मीमा व अफ़्आ़ले रज़ीला (या'नी मज़्मूम अख़्लाक़ और ज़लील कामों) से पाक पैदा किया है और अख़्लाक़े शरीफ़ा त़ाहिरा मुक़द्दसा पर उन की ख़िल्क़त (या'नी पैदाइश) फ़रमाई है इस लिये वोह हर ना कर्दनी (या'नी हर बुरे) फ़े'ल से बाज़ रहते हैं । एक रिवायत येह भी है कि जिस वक़्त **ज़ुलैख़ा** आप عَلَيْهِ السَّلَام के दरपै हुई उस वक़्त आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना **या'कूब** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को देखा कि अंगुश्ते (या'नी उंगली) मुबारक दन्दाने अक़्दस (या'नी पाकीज़ा दांतों) के नीचे दबा कर इज्तिनाब (या'नी बाज़ रहने) का इशारा फ़रमाते हैं ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ह़क़ीक़त येही है कि **इ़श्क़** सिर्फ़ **ज़ुलैख़ा** की त़रफ़ से था ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का दामन इस से क़त़्अ़न यक़ीनन पाक था । पारह 12 **सूरए यूसुफ़** आयत नम्बर 30 में शु-रफ़ाए मिस्र की बा'ज़ औ़रतों का क़ौल इस त़रह़ नक़्ल किया गया है :

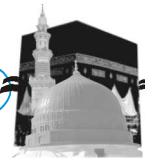

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (طبرانی)

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और शहर में कुछ औरतें बोलीं कि अ़ज़ीज़ की बीबी अपने नौ जवान का दिल लुभाती है, बेशक उन की **महब्बत** इस के दिल में पैर गई है, हम तो इसे सरीह़ ख़ुद रफ़्ता पाते हैं।

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "**ज़ुलैख़ा** को रग़बत थी मगर ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام त़ाक़त व क़ुदरत रखने के बा वुजूद इस (या'नी ज़ुलैख़ा की त़रफ़ रग़बत) से बाज़ रहे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाज़ रहने के अ़मल को ख़ूब सराहा ।" (اِحیاءُ الْعُلُوم ج۳ ص ۱۲۹)

आ़शिक़ाने नादान का रद हो गया ! : **इस से अज़्हर मिनश्शम्से व अब्यन मिनल अम्स** या'नी सूरज से ज़ियादा रोशन और रोज़े गुज़श्ता से ज़ियादा क़ाबिले यक़ीन हो गया कि आज कल के जो **आ़शिक़ाने नादान** अपने गुनाहों भरे सड़े हुए बदबूदार इ़श्क़ को दुरुस्त साबित करने के लिये مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और **ज़ुलैख़ा** के वाक़िए़ को आड़ बनाते हैं, येह हुक्मे क़ुरआनी के सरासर ख़िलाफ़ और कई सूरतों में सीधा **कुफ़्र तक ले जाने वाला** है । **सूरए यूसुफ़** में सिर्फ़ **ज़ुलैख़ा** की त़रफ़ से इ़श्क़ का तज़्किरा है मगर कहीं भी कोई इशारा तक नहीं मिलता कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी उस के इ़श्क़ में शरीक थे । लिहाज़ा जो लोग ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी इ़श्क़ में शरीक ठहराते हैं, वोह इस से तौबा और तज्दीदे ईमान करें या'नी तौबा कर के नए सिरे से मुसल्मान हों । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की शान बहुत अ़ज़ीम होती है और वोह गुनाहों से मा'सूम होते हैं ।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपनी ह़क़ीक़ी **महब्बत** और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची पक्की उल्फ़त नसीब फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दुन्या

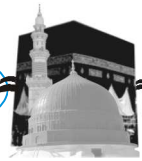

की चाहत हमारे दिल से निकाल दे । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो मुसल्मान गुनाहों भरे "इ़श्क़े मजाज़ी" के जाल में फंसे हुए हैं उन्हें रिहाई दे कर अपने म-दनी मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ुल्फ़ों का असीर (क़ैदी) बना दे । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मह़ब्बत ग़ैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह

मुझे अपना ही दीवाना बना लो या रसूलल्लाह

(इ़श्क़े मजाज़ी के **मु-तअ़ल्लिक़** दिलचस्प मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल** की मत़्बूआ़ किताब, "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़ह़ा 318 ता 356 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

इमाम औज़ाई का रिक़्क़त अंगेज़ बयान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल ग़ाफ़िलों को झंझोड़ झंझोड़ कर बेदार करने वाला, पुरसोज़ और इ़ब्रत अंगेज़ बयान सुनते हैं चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 125 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "शुक्र के फ़ज़ाइल" सफ़ह़ा नम्बर 32 ता 33 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! (दुन्या में मिली हुई) इन ने'मतों के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की भड़क्ती हुई उस आग से भागने पर मदद ह़ासिल करो जो दिलों पर चढ़ जाएगी, बेशक तुम ऐसे घर (या'नी दुन्याए ना पाएदार) में हो जिस में (लम्बी उ़म्र के ज़रीए मिली हुई) क़ियाम की त़वील मुद्दत भी क़लील (या'नी थोड़ी) है और इस में तुम्हें मुक़र्ररा मुद्दत तक उन गुज़श्ता लोगों का जा नशीन बना कर भेजा गया है, जिन्हों ने दुन्या की ख़ुश नुमाई और इस की रौनक़ व बहार का रुख़ किया, उन की उ़म्रें तुम से त़वील और क़द तुम से दराज़ थे और निशानात अ़ज़ीम थे । उन्हों ने पहाड़ों को चीर डाला, पथ्थर की चटानें काटीं, शहरों में घूमते रहे, ज़ियादा क़ुव्वत वाले, उन के जिस्म सुतून की त़रह़ थे । इस के बा वुजूद ज़माने ने जल्द ही उन की मुद्दतों को लपेट दिया, उन के

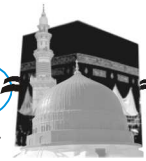

निशानात को मिटा दिया। उन के घरों को नेस्तो नाबूद कर दिया और उन के ज़िक्र को भुला दिया। अब तुम न उन को देखते हो न उन की आवाज़ सुनते हो। वोह झूटी उम्मीदों पर ख़ुश, ग़फ़्लत में रात दिन बसर करते थे। फिर तुम जानते हो कि रात के वक़्त उन के घरों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब उतरा तो सुब्ह़ उन में से अक्सर अपने घरों में मुंह के बल औंधे पड़े रह गए और जो बच गए वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब, उस की ने'मतों के ज़वाल और हलाकत में मुब्तला होने वालों के मुन्हदिम (या'नी गिरे हुए) घरों के आसार देखते रह गए। इस में निशानी है उन लोगों के लिये जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं और इ़ब्रत है उन के लिये जो दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हैं। और अब उन के बा'द तुम्हारी मुद्दत कम है और दुन्या आ़रिज़ी है और ज़माना ऐसा आ गया है कि न अ़फ़्वो दर गुज़र रहा और न ही नरमी बल्कि बुराई की कीचड़, बाक़ी मांदा रन्जो ग़म, इ़ब्रत नाक होल नाकियां, बची कुची सज़ाओं के अ-सरात, फ़ितनों के सैलाब, पै दर पै ज़ल्ज़लों और बद तरीन जा नशीनों का दौर दौरा है। उन की बुराइयों की वजह से ख़ुश्की व तरी में ख़राबी ज़ाहिर हुई। पस तुम उन की त़रह़ न होना जिन्हें लम्बी उम्मीदों और लम्बी मुद्दतों ने धोके में डाल दिया और वोह ख़्वाहिशात के हो कर रह गए। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करते हैं कि हमें और तुम्हें उन लोगों में कर दे जो अपनी नज़्र की हि़फ़ाज़त करते हुए उसे पूरा करते हैं और अपने (ह़क़ीक़ी) ठिकाने को पहचान कर ख़ुद को तय्यार रखते हैं।" **(تاریخ دِمشق لابن عساکِر ج ۳۵ ص ۲۰۸ رقم ۳۹۰۷)**

मौत ठहरी आने वाली आएगी जान ठहरी जाने वाली जाएगी
रूह़ रग रग से निकाली जाएगी तुझ पे इक दिन ख़ाक डाली जाएगी
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

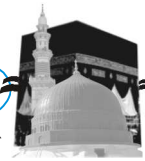

इमाम औज़ाई कौन थे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى जिन का अभी अभी रिक़्क़त अंगेज़ बयान सुना, येह जय्यिद आ़लिम, ज़बर दस्त मुफ़्ती और अहले शाम के बहुत बड़े इमाम गुज़रे हैं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सत्तर हज़ार फ़तवे दिये हैं, तब्अ़ ताबिईन में से थे । विलादते बा सआ़दत 88 सि.हि. में और वफ़ात शरीफ़ रबीउ़न्नूर 157 सि.हि. में हुई । **(حیاۃ الحیوان ج۱ص۱۹۸)**

ख़्वाब में रब की करम नवाज़ियां : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं ने एक बार ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ का ख़्वाब में दीदार किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! तू ही **नेकी की दा'वत** देता और बुराई से रोकता है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां मेरे प्यारे प्यारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे ही फ़ज़्लो करम से इस की तौफ़ीक़ मिली है । मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या से **इस्लाम** पर उठाना । इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : **सुन्नत** पर भी । **(حِلْيَةُ الْاَولياء ج٦ص١٥٣ رقم٨١٣١)**

वफ़ात का अ़जीब वाक़िआ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बैरूत में रहते थे, एक मर्तबा बैरूत के ह़म्माम में दाख़िल हुए तो ह़म्माम का मालिक बे ख़याली में दरवाज़ा बाहर से बन्द कर के चला गया । कुछ दिनों के बा'द आ कर जब उस ने ह़म्माम का दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम औज़ाई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى सीधा हाथ रुख़्सार (गाल) के नीचे कर के क़िब्ला रू लैटे हुए थे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी । **(ابنِ عساکِر ج۳۵ص۲۲۲)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सरकारे मदीना की सुन्नत पे जो चलते हैं
अल्लाह के वोह बन्दे ज़िन्दा हैं मज़ारों में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

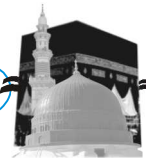

शराबी आया मुअज़्ज़िन बन गया ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का मक़्सद समझने, इसे ह़ासिल करने, मौत की तय्यारी का ज़ेह्न बनाने और शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए दुन्या के साथ साथ अपनी आख़िरत संवारने का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। देखिये तो सही ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल कैसे कैसे बिगड़े हुओं को सुधार देता है ! सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों से मालामाल सुन्नतों भरा सफ़र मुआ़-शरे के ठुकराए हुओं को कहां से कहां पहुंचा देता है ! चुनान्चे **महाराष्ट्र** (हिन्द) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं म-रज़े इ़स्यां (या'नी गुनाहों की बीमारी) में इन्तिहा द-रजे तक मुब्तला हो चुका था। दिन भर मज़दूरी करने के बा'द जो रक़म ह़ासिल होती रात को उसी से مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **शराब ख़रीद कर ख़ूब अ़य्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां बकता और वालिदैन व अहले मह़ल्ला को ख़ूब तंग करता इस के इलावा मैं परले द-रजे का जूआरी व बद तरीन बे नमाज़ी भी था।** इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम ज़ाएअ़ होते रहे, आख़िरे कार मेरे मुक़द्दर का सितारा चमका। हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से हुई। उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरग़ीब दी, उन के मीठे बोल ने कुछ ऐसा रंग जमाया कि मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत मिली और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रसाइल भी सुनने को मिले। जिस की येह ब-र-कत ह़ासिल हुई कि मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जूआरी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि **सदाए मदीना** लगाने (या'नी फ़ज्र की नमाज़ के लिये मुसल्मानों को जगाने) और दूसरों को म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया।

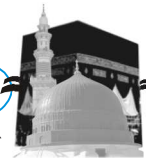

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरी इन्फ़िरादी कोशिश से** (ता दमे बयान) **30 इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन चुके हैं** और इस वक़्त मैं एक मस्जिद में **मुअज़्ज़िन** हूं और म-दनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।

छोड़ें मै नोशियां मत बकें गालियां आएं तौबा करें क़ाफ़िले में चलो
ऐ शराबी तू आ, आ जूआरी तू आ छूटें बद आ़दतें क़ाफ़िले में चलो
होगा लुत्फ़े ख़ुदा, आओ भाई दुआ़ मिल के सारे करें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 615)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान कर्दा म-दनी बहार के ज़रीए नेकी की दा'वत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बे नमाज़ी, शराबी, जूआरी, मां बाप का दिल दुखाने और पड़ोसियों को सताने, गाली गलोच करने वाला, अल्लहड़ नौ जवान मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की "इन्फ़िरादी कोशिश" के नतीजे में म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना, वहां **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों में सुन्नतों भरे म-दनी रसाइल सुनने और ताइब हो कर सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाने वाला, सदाए मदीना लगाने वाला, मस्जिद में अज़ानें दे कर नमाज़ों के लिये बुलाने वाला बना और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन कर दूसरों को बनाने वाला बन गया। ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! याद रखिये ! **नमाज़** हर आ़क़िल बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है, नमाज़ अदा करने वाला जन्नत का मुस्तह़िक़ है जब कि बिला उ़ज़्र एक वक़्त की नमाज़ भी जो क़ज़ा करने वाला है, वोह हज़ारों साल अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। **शराबी व जूआरी** की दोनों जहानों में ज़िल्लतो ख़्वारी और दोज़ख़ की ख़ौफ़नाक सज़ाओं की ह़क़दारी है, **मां बाप को बुरा भला कहने वालों** को सरकारे मदीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज इस ह़ाल में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि वोह आग की शाख़ों से लटके हुए थे। **पड़ोसी** के बहुत सारे हु़क़ूक़ हैं ! **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **है :** वोह जन्नत में नहीं जाएगा, जिस का पड़ोसी उस की आफ़तों से अम्न में नहीं है। (مُسلِم ص٤٣ حدیث٧٣.(٤٦)) किसी मुसल्मान को **गाली** निकालना ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

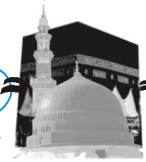

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (کنز العمال)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

रमज़ान में गुनाह करने वाले की क़ब्र का भयानक मन्ज़र

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

एक बार अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ज़ियारते क़ुबूर के लिये कूफ़ा के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए। वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी। आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को उस के ह़ालात मा'लूम करने की ख़्वाहिश हुई। चुनान्चे, बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) फ़रमा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन मस्मूअ़ हुई (या'नी सुनी गई) और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल थे तमाम उठा दिये गए। अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था! क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस त़रह़ फ़रयाद कर रहा है : "**يَاعَلِيُّ! اَنَا غَرِيْقٌ فِى النَّارِ وَحَرِيْقٌ فِى النَّارِ**" या'नी **या अ़ली !** मैं आग में डूबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं। क़ब्र के दहशत नाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्दनाक पुकार ने ह़ैदरे कर्रार كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बे क़रार कर दिया। आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रह़मत वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत ही आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दरख़्वास्त पेश की। ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ अ़ली ! आप इस की सिफ़ारिश न ही फ़रमाएं क्यूंकि रोज़े रखने के बा वुजूद येह शख़्स रमज़ानुल मुबारक की बे ह़ुरमती करता, रमज़ानुल मुबारक में भी गुनाहों से बाज़ न आता था। दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था।" मौलाए काइनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم येह सुन कर और भी रन्जीदा हो गए और सजदे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तू मुझे इस के आगे रुस्वा न फ़रमा, इस की बे बसी पर रह़म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم रो रो कर मुनाजात कर रहे थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरया जोश में आ गया और निदा आई : "ऐ अ़ली ! हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली के सबब इसे बख़्श दिया।" चुनान्चे, उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया। (انیس الواعظین ص۲۵)

क्यूं न मुश्किल कुशा कहूं तुम को तुम ने बिगड़ी मेरी बनाई है

जो लोग रोज़ा रखने के बा वुजूद गुनाह की सूरतों पर मुश्तमिल ताश, शत़रंज, लुडो, मोबाइल,

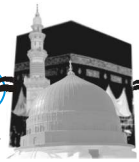

आई पेड वग़ैरहा पर वीडियो गेम्ज़, फ़िल्में, डिरामे, गाने बाजे, दाढ़ी मुन्डाना या एक मुठ्ठी से घटाना, बिला उ़ज़्रे शरई जमाअ़त तर्क कर देना बल्कि مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ क़ज़ा कर देना, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी, वा'दा ख़िलाफ़ी, गाली गलोच, बिला इजाज़ते शरई मुसलमान की ईज़ा रसानी, शरअ़न ह़क़दार न होने के बा वुजूद गदा गरी (या'नी भीक मांगना), मां-बाप की ना फ़रमानी, सूद व रिश्वत का लेन देन, कारोबार में धोका देना वग़ैरा वग़ैरा बुराइयों से रमज़ानुल मुबारक में भी बाज़ नहीं आते उन के लिये बयान की हुई ह़िकायत में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है।

रमज़ान शरीफ़ में गुनाहों से बाज़ न आने वाले मज़ीद दो अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाएं और ख़ुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से डराएं।

(1) जिस ने रमज़ानुल मुबारक में कोई गुनाह किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के एक साल के आ'माल बरबाद फ़रमा देगा। (المعجم الاوسط ج۲ص۴۱۴حدیث۳۶۸۸، ملخصاً) (2) मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे रमज़ान का ह़क़ अदा करती रहेगी। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ान के ह़क़ को ज़ाएअ़ करने में उन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : "इस माह में उन का ह़राम कामों का करना" फिर फ़रमाया : "जिस ने इस माह में ज़िना किया या शराब पी तो अगले रमज़ान तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और जितने आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते हैं। पस अगर येह शख़्स अगले माहे रमज़ान को पाने से पहले ही मर गया तो इस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो इसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे रमज़ान के मुआ़मले में डरो क्यूंकि जिस त़रह़ इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ गुनाहों का भी मुआ़मला है।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! माहे रमज़ान की ना क़द्री से बचने का ख़ुसूसिय्यत के साथ सामान कीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूसी भी नहीं, रह़मत के दरवाज़े खुले हैं। गिड़ गिड़ा कर तौबा कर के गुनाहों से बाज़ आ जाइये, नेक और सुन्नतों का पाबन्द बनने के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत और सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़फ़िरत व
बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा का पड़ोस

20 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1436 हि.
08-06-2015

नोट : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ फ़ैज़ाने रमज़ान का मुत़ालआ़ कीजिये, इस में ह़त्तल इमकान आसान अन्दाज़ में फ़ज़ाइल और रोज़े के सेंकड़ों मसाइल पेश किये गए हैं, येह इश्तिहार, फ़ैज़ाने रमज़ान और अमीरे अहले सुन्नत के सुन्नतों भरे बयानात की VCD वग़ैरा मक्तबतुल मदीना के हर बस्ते से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

गुनाहों के ग्यारह (11) इलाज

﴿1﴾ يَا عَفُوُّ : कसरत के साथ पढ़ते रहने से दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हो जाती है।

﴿2﴾ يَامُحْيِيُ يَامُمِيْتُ : शहवत बहुत तंग करती हो तो पढ़ते पढ़ते रात सो जाया करें।

﴿3﴾ يَاحَمِيْدُ : वस्वसों और बुरी आदतों से नजात पाने के लिये रात के वक़्त अंधेरे में बिल्कुल तन्हा बैठ कर 93 बार पढ़ें (कम अज़ कम 45 दिन तक)।

﴿4﴾ يَامُحْصِيُ : सोते वक़्त सीने पर हाथ रख कर सात बार पढ़ लिया करें ان شاء الله عزوجل इबादत में दिल लगेगा।

﴿5﴾ يَا بَاعِثُ : इबादत में दिल लगने के लिये सीने पर हाथ रख कर सोते वक़्त सौ[100] बार पढ़िये (ان شاء الله عزوجل गुनाहों से नफ़रत हो जाएगी)।

﴿6﴾ يَا مُقْسِطُ : नमाज़ के बा'द सौ[100] बार पढ़ने से वस्वसों और गन्दा ज़ेहनी से नजात मिलने के साथ साथ रन्जो ग़म ख़त्म हो कर मसर्रतो शादमानी नसीब होगी (ان شاء الله عزوجل)।

﴿7﴾ يَاقَهَّارُ : चलते फिरते ज़िर्द करते रहने से दुन्या की महब्बत दूर होती है और **अल्लाह** व रसूल عزوجل وصلى الله تعالى عليه واله وسلم की महब्बत पैदा होती है।

﴿8﴾ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ : शैतान से महफ़ूज़ रहने के लिये रोज़ाना दस[10] बार पढ़िये।

﴿9﴾ يَا مَتِيْنُ : औलाद अगर फ़िक्रे फ़ुज़ूल में मुब्तला हो गई हो तो दस[10] बार रोज़ाना पढ़ कर उन पर दम कर दिया करें।

﴿10﴾ يَامُحْيِيُ يَامُمِيْتُ : बिला हिसाब जन्नत में दाख़िले के लिये हर नमाज़ के बा'द सीने पर हाथ रख कर सात बार पढ़ कर सीने पर दम करें। (ان شاء الله عزوجل) बुरी आदतें भी छूटेंगी और इबादत में भी दिल लगेगा।

﴿11﴾ يَابَاطِنُ : हर नमाज़ के बा'द सौ[100] बार पढ़िये, (ان شاء الله عزوجل) वस्वसों और गन्दे ख़यालात से छुटकारा हासिल होगा।

नोट : हर अमल के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ें। ज़िर्द शुरूअ करने से क़ब्ल किसी सुन्नी आलिम या क़ारी साहिब को सुना कर दुरुस्त मख़रज के साथ पढ़ें, नमाज़े पन्जगाना की बा जमाअत पाबन्दी लाज़िम है।

मदनी मश्वरा : परेशान हाल इस्लामी भाई को चाहिये कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के वहां दुआ मांगे अगर ख़ुद मजबूर है मसलन इस्लामी बहन है तो किसी और को सफ़र पर भिजवाए।

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net